पाठ 25

1. कौन याकूब की रक्षा करके उसे हारान देश से कनान देश में सुरक्षित वापस ले आया?

-परमेश्वर।

2. उस पुत्र का क्या नाम था जिसे याकूब अपने अन्य पुत्रों से अधिक प्रेम करता था?

-यूसुफ।

3. क्योंकि याकूब अपने पुत्र यूसुफ को अन्य भाइयों से अधिक प्रेम करता था, अन्य भाइयों ने यूसुफ के बारे में क्या सोचा?

-वे यूसुफ से जलते थे, और उस से बैर रखते थे।

4. परमेश्वर ने यूसुफ को पहला स्वप्न क्या दिया था?

-भाइयों के अन्न के पूल यूसुफ के अन्न के पूले को दण्डवत् किए।

5. परमेश्वर ने यूसुफ को दूसरा स्वप्न क्या दिया था?

-सूरज, चाँद और ग्यारह तारे यूसुफ को दण्डवत करते थे।

6. दोनों सपनों का क्या मतलब था?

-एक दिन, परमेश्वर यूसुफ को प्रधान बनाएगा, और यूसुफ का परिवार उसे दण्डवत करेगा।

7. कौन यूसुफ के भविष्य को जानता था, और उसे अपने सपनों के माध्यम से भविष्य दिखाया था?

-परमेश्वर।

8. जब यूसुफ अपने भाइयों से मिलने मैदान में आया, तब उसके भाइयों ने क्या किया?

- सबसे पहले, उन्होंने उसका चोगा उतार दिया, और उसे एक सूखे कुएँ में फेंक दिया।

- बाद में उन्होंने यूसुफ को गुलाम व्यापारियों के हाथों बेच दिया।

9. दास व्यापारी यूसुफ को कहाँ ले गए?

-मिस्र को।

10. दास व्यापारियों ने यूसुफ को दास के रूप में किसको बेच दिया?

-पोतीपर को।

11. जब यूसुफ पोतीपर का दास था तब क्या हुआ?

-पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ के विषय में झूठ बोला, और पोतीपर ने यूसुफ को बन्दीगृह में डाल दिया।

-क्या परमेश्वर यूसुफ के बारे में भूल गए?

-नहीं। परमेश्वर किसी को नहीं भूलते।

-यूसुफ मिस्र देश में बन्दीगृह में है।

-मिस्र के राजा का नाम फिरौन था।

-एक दिन, परमेश्वर ने मिस्र के राजा फिरौन को एक स्वप्न दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:1-4

1- जब पूरे दो वर्ष बीत गए, तब फिरौन ने स्वप्न देखा, कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है,

2 और जब नदी में से सात मोटी और मोटी मोटी गायें निकलीं, तब वे नरकटोंके बीच चरती थीं।

3-उनके बाद, सात अन्य बदसूरत और दुबली गायें, नील नदी से निकलीं और नदी के किनारे उनके पास खड़ी हो गईं।

4-और जो गायें कुरूप और दुबली थीं, वे सात मोटी मोटी मोटी गायों को खा गईं। तब फ़िरौन जाग उठा।

-फिरौन को स्वप्न किसने दिया?

-परमेश्वर।

-परमेश्वर ने फिरौन को क्या स्वप्न दिया था?

-सात पतली गायों ने सात मोटी गायों को खा लिया।

-उसी रात, परमेश्वर ने फिरौन को दूसरा स्वप्न दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:5-8

5-फिरौन फिर सो गया और उसने दूसरा स्वप्न देखा: एक ही डंठल पर सात बाल, स्वस्थ और अच्छे, बढ़ रहे थे।

6 उनके बाद और सात बालें निकलीं, जो पतली और पुरवाई से झुलस गईं।

7-अनाज के पतले सिरों ने सात स्वस्थ, भरे हुए सिरों को निगल लिया। तब फिरौन जाग उठा; यह एक सपना था।

8 बिहान को उसका मन व्याकुल हुआ, सो उस ने मिस्र के सब जादूगरोंऔर पण्डितोंको बुलवा भेजा। फ़िरौन ने उन्हें अपके स्वप्न बताए, परन्तु कोई उसके लिये उनका अर्थ न बता सका।

-दूसरा सपना क्या था जिसे परमेश्वर ने फिरौन को दिया था?

-सात मोटी बालें सात मोटी बालें खा गईं।

-फिरौन मिस्र का राजा था, परन्तु फिरौन परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता था।

-फिरौन और उसके लोगों ने सूर्य, चंद्रमा और सितारों की पूजा की।

-फिरौन और उसके लोगों ने मेंढकों, जानवरों और उस नदी की पूजा की जो उनके देश में थी।

-भले ही फिरौन परमेश्वर में विश्वास नहीं करता था, क्या परमेश्वर फिरौन को वह करने के लिए निर्देशित करने में सक्षम था जो परमेश्वर चाहता था?

-हां।

-क्या ईश्वर उन लोगों को निर्देशित करने में सक्षम है जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं?

-हां।

-परमेश्वर ही एकमात्र ईश्वर है, और वह लोगों को वह करने के लिए निर्देशित करने में सक्षम है जो वह चाहता है।

-क्योंकि परमेश्वर पूर्ण है, तथापि, परमेश्वर लोगों के साथ जो कुछ भी करता है वह पूर्ण है।

-मिस्र के सभी ज्ञानी फिरौन के स्वप्नों की समझ को नहीं जानते थे।

-लेकिन किसी ने फिरौन से कहा कि यूसुफ फिरौन के सपनों की समझ को जानता होगा।

सो फिरौन ने यूसुफ को बन्दीगृह से उसके पास आने को बुलवा भेजा।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:14-16

14 तब फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा, और वह फुर्ती से कालकोठरी से निकाल लाया गया। जब उस ने मुण्डाकर अपके वस्त्र बदले, तब वह फिरौन के साम्हने आया।

15 फिरौन ने यूसुफ से कहा, “मैंने एक स्वप्न देखा है, और कोई उसका फल नहीं बता सकता। परन्तु मैं ने तेरे विषय में यह कहते सुना है, कि जब तू स्वप्न को सुनता है, तब उसका अर्थ भी निकाल सकता है।”

16- "मैं यह नहीं कर सकता," यूसुफ ने फिरौन को उत्तर दिया, "परन्तु परमेश्वर फिरौन को वह उत्तर देगा जो वह चाहता है।"

-यूसुफ जानता था कि वह फिरौन के सपनों की समझ को नहीं जान पा रहा है।

-लेकिन यूसुफ यह भी जानता था कि परमेश्वर फिरौन के सपनों की समझ को जानने में सक्षम है।

-क्योंकि यूसुफ परमेश्वर में विश्वास करता था, परमेश्वर ने यूसुफ को फिरौन के सपनों की समझ के बारे में बताया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:25-32

25 तब यूसुफ ने फिरौन से कहा, “फिरौन के स्वप्न एक ही हैं। परमेश्वर ने फिरौन पर प्रकट किया है कि वह क्या करने वाला है।

26 सात अच्छी अच्छी गायें सात वर्ष हैं, और वे सात अच्छी बालियां सात वर्ष की हैं; यह एक ही सपना है।

27 जो सात दुबली और कुरूप गायें उसके बाद निकलीं, वे सात वर्ष की हैं, और वे सात फालतू बालें पुरवाई से झुलसी हुई हैं: वे सात वर्ष के अकाल हैं।

28- जैसा मैं ने फिरौन से कहा, वैसा ही परमेश्वर ने फिरौन को दिखाया है कि वह क्या करने जा रहा है।

29-मिस्र देश में सात वर्ष बड़े बहुतायत के आ रहे हैं,

30 परन्तु उनके पीछे सात वर्ष का अकाल पड़ेगा। तब मिस्र की सारी बहुतायत भुला दी जाएगी, और अकाल देश को तबाह कर देगा।

-कौन याकूब की रक्षा करके उसे हारान देश से कनान देश में सुरक्षित वापस ले आया?

-परमेश्वर।

-उस पुत्र का क्या नाम था जिसे याकूब अपने अन्य पुत्रों से अधिक प्रेम करता था?

-यूसुफ।

-क्योंकि याकूब अपने पुत्र यूसुफ को अन्य भाइयों से अधिक प्रेम करता था, अन्य भाइयों ने यूसुफ के बारे में क्या सोचा?

-वे यूसुफ से जलते थे, और उस से बैर रखते थे।

-परमेश्वर ने यूसुफ को पहला स्वप्न क्या दिया था?

-भाइयों के अन्न के पूल यूसुफ के अन्न के पूले को दण्डवत् किए।

-परमेश्वर ने यूसुफ को दूसरा स्वप्न क्या दिया था?

-सूरज, चाँद और ग्यारह तारे यूसुफ को दण्डवत करते थे।

-दोनों सपनों का क्या मतलब था?

-एक दिन, परमेश्वर यूसुफ को प्रधान बनाएगा, और यूसुफ का परिवार उसे दण्डवत करेगा।

-कौन यूसुफ के भविष्य को जानता था, और उसे अपने सपनों के माध्यम से भविष्य दिखाया था?

-परमेश्वर।

-जब यूसुफ अपने भाइयों से मिलने मैदान में आया, तब उसके भाइयों ने क्या किया?

- सबसे पहले, उन्होंने उसका चोगा उतार दिया, और उसे एक सूखे कुएँ में फेंक दिया।

- बाद में उन्होंने यूसुफ को गुलाम व्यापारियों के हाथों बेच दिया।

-दास व्यापारी यूसुफ को कहाँ ले गए?

-मिस्र को।

-दास व्यापारियों ने यूसुफ को दास के रूप में किसको बेच दिया?

- पोतीपर को।

-जब यूसुफ पोतीपर का दास था तब क्या हुआ?

-पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ के विषय में झूठ बोला, और पोतीपर ने यूसुफ को बन्दीगृह में डाल दिया।

-क्या परमेश्वर यूसुफ के बारे में भूल गए?

-नहीं। परमेश्वर किसी को नहीं भूलते।

-यूसुफ मिस्र देश में बन्दीगृह में है।

-मिस्र के राजा का नाम फिरौन था।

-एक दिन, परमेश्वर ने मिस्र के राजा फिरौन को एक स्वप्न दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:1-4

1- जब पूरे दो वर्ष बीत गए, तब फिरौन ने स्वप्न देखा, कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है,

2 और जब नदी में से सात मोटी और मोटी मोटी गायें निकलीं, तब वे नरकटोंके बीच चरती थीं।

3-उनके बाद, सात अन्य बदसूरत और दुबली गायें, नील नदी से निकलीं और नदी के किनारे उनके पास खड़ी हो गईं।

4-और जो गायें कुरूप और दुबली थीं, वे सात मोटी मोटी मोटी गायों को खा गईं। तब फ़िरौन जाग उठा।

-फिरौन को स्वप्न किसने दिया?

-परमेश्वर।

-परमेश्वर ने फिरौन को क्या स्वप्न दिया था?

-सात पतली गायों ने सात मोटी गायों को खा लिया।

-उसी रात, परमेश्वर ने फिरौन को दूसरा स्वप्न दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:5-8

5-फिरौन फिर सो गया और उसने दूसरा स्वप्न देखा: एक ही डंठल पर सात बाल, स्वस्थ और अच्छे, बढ़ रहे थे।

6 उनके बाद और सात बालें निकलीं, जो पतली और पुरवाई से झुलस गईं।

7-अनाज के पतले सिरों ने सात स्वस्थ, भरे हुए सिरों को निगल लिया। तब फिरौन जाग उठा; यह एक सपना था।

8 बिहान को उसका मन व्याकुल हुआ, सो उस ने मिस्र के सब जादूगरोंऔर पण्डितोंको बुलवा भेजा। फ़िरौन ने उन्हें अपके स्वप्न बताए, परन्तु कोई उसके लिये उनका अर्थ न बता सका।

-दूसरा सपना क्या था जिसे परमेश्वर ने फिरौन को दिया था?

-सात मोटी बालें सात मोटी बालें खा गईं।

-फिरौन मिस्र का राजा था, परन्तु फिरौन परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता था।

-फिरौन और उसके लोगों ने सूर्य, चंद्रमा और सितारों की पूजा की।

-फिरौन और उसके लोगों ने मेंढकों, जानवरों और उस नदी की पूजा की जो उनके देश में थी।

-भले ही फिरौन परमेश्वर में विश्वास नहीं करता था, क्या परमेश्वर फिरौन को वह करने के लिए निर्देशित करने में सक्षम था जो परमेश्वर चाहता था?

-हां।

-क्या ईश्वर उन लोगों को निर्देशित करने में सक्षम है जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं?

-हां।

-परमेश्वर ही एकमात्र ईश्वर है, और वह लोगों को वह करने के लिए निर्देशित करने में सक्षम है जो वह चाहता है।

-क्योंकि परमेश्वर पूर्ण है, तथापि, परमेश्वर लोगों के साथ जो कुछ भी करता है वह पूर्ण है।

-मिस्र के सभी ज्ञानी फिरौन के स्वप्नों की समझ को नहीं जानते थे।

-लेकिन किसी ने फिरौन से कहा कि यूसुफ फिरौन के सपनों की समझ को जानता होगा।

-सो फिरौन ने यूसुफ को बन्दीगृह से उसके पास आने को बुलवा भेजा।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:14-16

14 तब फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा, और वह फुर्ती से कालकोठरी से निकाल लाया गया। जब उस ने मुण्डाकर अपके वस्त्र बदले, तब वह फिरौन के साम्हने आया।

15 फिरौन ने यूसुफ से कहा, “मैंने एक स्वप्न देखा है, और कोई उसका फल नहीं बता सकता। परन्तु मैं ने तेरे विषय में यह कहते सुना है, कि जब तू स्वप्न को सुनता है, तब उसका अर्थ भी निकाल सकता है।”

16- "मैं यह नहीं कर सकता," यूसुफ ने फिरौन को उत्तर दिया, "परन्तु परमेश्वर फिरौन को वह उत्तर देगा जो वह चाहता है।"

-यूसुफ जानता था कि वह फिरौन के सपनों की समझ को नहीं जान पा रहा है।

-लेकिन यूसुफ यह भी जानता था कि परमेश्वर फिरौन के सपनों की समझ को जानने में सक्षम है।

-क्योंकि यूसुफ परमेश्वर में विश्वास करता था, परमेश्वर ने यूसुफ को फिरौन के सपनों की समझ के बारे में बताया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:25-32

25 तब यूसुफ ने फिरौन से कहा, “फिरौन के स्वप्न एक ही हैं। परमेश्वर ने फिरौन पर प्रकट किया है कि वह क्या करने वाला है।

26 सात अच्छी अच्छी गायें सात वर्ष हैं, और वे सात अच्छी बालियां सात वर्ष की हैं; यह एक ही सपना है।

27 जो सात दुबली और कुरूप गायें उसके बाद निकलीं, वे सात वर्ष की हैं, और वे सात फालतू बालें पुरवाई से झुलसी हुई हैं: वे सात वर्ष के अकाल हैं।

28- जैसा मैं ने फिरौन से कहा, वैसा ही परमेश्वर ने फिरौन को दिखाया है कि वह क्या करने जा रहा है।

29-मिस्र देश में सात वर्ष बड़े बहुतायत के आ रहे हैं,

30 परन्तु उनके पीछे सात वर्ष का अकाल पड़ेगा। तब मिस्र की सारी बहुतायत भुला दी जाएगी, और अकाल देश को तबाह कर देगा।

31-देश में जो बहुतायत है उसका स्मरण न रहेगा, क्योंकि उसके बाद जो अकाल पड़ेगा, वह इतना भीषण होगा।

32 जिस कारण से फिरौन को स्वप्न दो रूपों में दिया गया वह यह है कि मामला परमेश्वर के द्वारा दृढ़ता से तय किया गया है, और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा।"

-यूसुफ को फिरौन के सपनों की समझ किसने दी?

-परमेश्वर।

-फिरौन के दोनों सपनों का क्या मतलब था?

-सात साल की अच्छी फसल सात साल के अकाल में खा जाएगी।

-अच्छी फसल के सात साल और अकाल के सात साल आने के साथ, यूसुफ ने फिरौन को एक योजना सुझाई।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:33-36

33-यूसुफ ने कहा, "अब फिरौन एक समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति ढूंढ़कर उसे मिस्र देश का अधिकारी ठहराए।

34- फ़िरौन देश पर अधिकारी ठहराए, कि वे सात वर्ष की बहुतायत के समय में मिस्र की फसल का पांचवां भाग ले लें।

35-वे इन अच्छे वर्षोंमें से जो कुछ आनेवाले हैं, सब अन्न बटोर ले, और अन्न को फिरौन के वश में करके रख ले, कि वह अन्न के लिथे नगरोंमें रखा जाए।

36 और यह भोजन देश के लिये सुरक्षित रखा जाए, कि मिस्र पर आनेवाले सात वर्षों के अकाल में काम में आए, ऐसा न हो कि देश अकाल से उजड़ जाए।

-यूसुफ ने सुझाव दिया कि फिरौन किसी को अच्छी फसल के वर्षों के अधिशेष को जमा करने के लिए ढूंढे ताकि अकाल के वर्षों में लोगों के पास खाने के लिए पर्याप्त हो।

-फिरौन ने यूसुफ के विचार के बारे में क्या सोचा?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:37-40

37- फिरौन और उसके सब हाकिमों को यह युक्ति अच्छी लगी।

38 तब फिरौन ने उन से पूछा, क्या हम इस मनुष्य के समान किसी को पा सकते हैं, जिस में परमेश्वर का आत्मा है?

39 तब फिरौन ने यूसुफ से कहा, जब परमेश्वर ने यह सब तुझे बताया है, तो तेरे तुल्य कोई समझदार और बुद्धिमान नहीं।

40- मेरे महल का अधिकारी तू होगा, और मेरी सारी प्रजा तेरी आज्ञा के अधीन होगी। केवल सिंहासन के संबंध में मैं तुमसे बड़ा होऊंगा। ”

- फिरौन ने यूसुफ को मिस्र का राजा बनाया।

- मिस्र में केवल फिरौन यूसुफ से बड़ा था।

-यद्यपि यूसुफ को उसके भाइयों ने दास के रूप में बेच दिया था, फिर भी परमेश्वर ने यूसुफ को नहीं छोड़ा।

-यद्यपि यूसुफ को बन्दीगृह में डाल दिया गया था, परमेश्वर ने यूसुफ को नहीं छोड़ा।

-परमेश्वर ने उन सपनों को कैसे पूरा किया जो उसने यूसुफ को दिए थे जब यूसुफ अभी भी एक लड़का था?

-परमेश्वर ने यूसुफ को सारे मिस्र पर राजा बनाया।

-परमेश्वर हमेशा वही करता है जिसकी वह योजना बनाता है।

-परमेश्वर की योजनाओं को कोई नहीं रोक सकता।

-फिरौन द्वारा यूसुफ को मिस्र का राजा बनाने के बाद, यूसुफ ने अच्छी फसल के वर्षों के अधिशेष को जमा करना शुरू कर दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 41:46-49

46 जब यूसुफ मिस्र के राजा फिरौन की सेवा में आया, तब वह तीस वर्ष का था। और यूसुफ फिरौन के साम्हने से निकलकर सारे मिस्र देश में चला गया।

47-सात वर्ष की बहुतायत के दौरान भूमि ने भरपूर उत्पादन किया।

48-यूसुफ ने मिस्र में उन सात वर्षों की बहुतायत में उत्पादित सभी खाद्य पदार्थों को एकत्र किया और नगरों में रखा। वह हर एक नगर में उसके आसपास के खेतों में उगाई गई सब्ज़ियों को रखता था।

49-यूसुफ ने समुद्र की बालू के नाईं अन्न का बड़ा भंडार किया; यह इतना अधिक था कि उसने रिकॉर्ड रखना बंद कर दिया क्योंकि यह माप से परे था।

-अच्छी फसल के सात वर्षों के दौरान, यूसुफ ने जितना अनाज गिना जा सकता था, उससे अधिक जमा किया।

-जब अच्छी फसल के सात वर्ष पूरे हुए, तब सात वर्ष का अकाल आरम्भ हुआ।

-यूसुफ के पिता और भाई कहां थे?

-कनान में रहते हैं।

-कनान में भी अकाल पड़ा, और यूसुफ के पिता और उसके भाइयों के पास फिर भोजन न रहा।

-यहाँ यूसुफ के पिता याकूब ने कहा:

आइए पढ़ें उत्पत्ति 42:1-5

1जब याकूब को पता चला कि मिस्र में अन्न है, तब उस ने अपके पुत्रोंसे कहा, तुम एक दूसरे को क्यों देखते रहते हो?

2-उसने आगे कहा, "मैंने सुना है कि मिस्र में अनाज है। वहां जाकर हमारे लिये कुछ मोल ले लो, कि हम जीवित रहें और मरें नहीं।"

3-तब यूसुफ के दस भाई मिस्र से अन्न मोल लेने को गए।

4-परन्तु याकूब ने यूसुफ के भाई बिन्यामीन को औरों के संग न भेजा, क्योंकि वह डरता था, कि कहीं उस पर विपत्ति न आ पड़े।

5 सो इस्राएल के पुत्र उन में से थे जो अन्न मोल लेने को गए थे, क्योंकि कनान देश में भी अकाल था।

-यूसुफ के पिता याकूब ने अपने पुत्रों को अन्न मोल लेने के लिए मिस्र भेजा।

-क्या हुआ जब यूसुफ के भाई मिस्र पहुंचे?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 42:6ख-17

6 सो जब यूसुफ के भाई आए, तब उन्होंने भूमि पर मुंह करके उसको दण्डवत् किया।

7 यूसुफ ने अपके भाइयोंको देखते ही उन्हें पहिचान लिया, परन्तु परदेशी होने का ढोंग किया, और उन से कठोरता से बातें की। "आप कहां से हैं?" उसने पूछा। "कनान देश से," उन्होंने उत्तर दिया, "भोजन मोल लेने के लिए।"

8- यद्यपि यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, तौभी उन्होंने उसे न पहचाना।

9-तब उसने उनके विषय में अपने स्वप्नों को स्मरण किया और उन से कहा, “तुम भेदिए हो! तुम यह देखने आए हो कि हमारी भूमि कहाँ असुरक्षित है।”

10- "नहीं, मेरे प्रभु," उन्होंने उत्तर दिया। “तेरे दास भोजन मोल लेने आए हैं।

11-हम सब एक ही आदमी के बेटे हैं। तेरे सेवक सच्चे हैं, भेदिए नहीं।”

12- "नहीं!" यूसुफ ने उन से कहा। "आप यह देखने आए हैं कि हमारी भूमि कहाँ असुरक्षित है।"

13 परन्तु उन्होंने उत्तर दिया, कि तेरे दास बारह भाई थे, जो कनान देश में रहने वाले एक ही मनुष्य के पुत्र थे। सबसे छोटा अब हमारे पिता के पास है, और एक नहीं रहा।"

14-यूसुफ ने उन से कहा, जैसा मैं ने तुम से कहा, वैसा ही है: तुम भेदिए हो!

15 और इस प्रकार तुम्हारी परीक्षा होगी: जब तक तुम्हारा छोटा भाई यहां न आए, तब तक फिरौन के जीवन की शपय तुम इस स्थान से न जाने पाओगे।

16-अपने भाई को पाने के लिए अपना एक नंबर भेजो; और तुम में से बाक़ी लोगों को बन्दीगृह में रखा जाएगा, ताकि तुम्हारे वचनों की परीक्षा हो, कि तुम सच कहते हो या नहीं। यदि तू नहीं है, तो निश्चय फिरौन के जीवन की शपथ, तू भेदिया है!"

17-और उस ने उन सभोंको तीन दिन के लिथे बन्दीगृह में रखा।

-यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचाना, लेकिन उसके भाइयों ने यूसुफ को नहीं पहचाना।

- यूसुफ ने अपने भाइयों के साथ कठोर व्यवहार क्यों किया और उन्हें जेल में डाल दिया?

-यूसुफ चाहता था कि उसके भाई इस बारे में सोचें कि जब वह छोटा था तब उन्होंने उसके साथ क्या किया था।

-तीन दिन के बाद यूसुफ ने एक को छोड़ अपने सब भाइयों को बन्दीगृह से बाहर जाने दिया।

-यूसुफ ने अपने भाइयों से यह कहा:

आइए पढ़ें उत्पत्ति 42:18-20

18 तीसरे दिन यूसुफ ने उन से कहा, यह करो, तो तुम जीवित रहोगे, क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूं।

19 यदि तुम सच्चे मनुष्य हो, तो अपके भाइयोंमें से एक को यहां बन्दीगृह में रहने दे, और बाकी के लोग जाकर अपके भूखे घरानोंके लिथे अन्न ले लो।

20 परन्तु अपके छोटे भाई को मेरे पास ले आना, कि तेरे वचन सत्य हों, और तू न मरे।" यह वे करने लगे।

तब यूसुफ ने अपके भाइयोंको अन्न दिया, और एक को छोड़ अपके सब भाइयोंको कनान देश भेज दिया।

-कुछ समय के बाद, जो अन्न यूसुफ के भाई कनान देश में ले गए थे, वह समाप्त हो गया।

-इसलिए, यूसुफ के पिता ने अपने बेटों से कहा कि वे अधिक अनाज खरीदने के लिए मिस्र लौट आएं।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 43:1-5 और 11-14

1-अब देश में अकाल अभी भी भयंकर था।

2 सो जब वे सब अन्न खा चुके जो वे मिस्र से लाए थे, तब उनके पिता ने उन से कहा, लौट जाओ, और हमारे लिये कुछ और अन्न मोल ले लो।

3-परन्तु यहूदा ने उस से कहा, उस ने हम को गम्भीरता से चेतावनी दी, कि जब तक तेरा भाई तेरे संग न रहे, तब तक तू मेरा दर्शन फिर न पाएगा।

4-यदि तू हमारे भाई को हमारे साथ भेजे, तो हम उतरकर तेरे लिथे भोजन मोल लेंगे।

5 परन्तु यदि तू उसे न भेजे, तो हम न उतरेंगे, क्योंकि उस ने हम से कहा है, कि जब तक तेरा भाई तेरे संग न रहे, तब तक तू मेरा दर्शन फिर न पा सकेगा।

11-तब उनके पिता इस्राएल ने उन से कहा, यदि हो, तो यह करना, कि देश की उत्तम उत्तम उपज में से कुछ अपनी बोरियोंमें रखना, और उस मनुष्य को भेंट में देना, अर्थात् थोड़ा सा बाम और थोड़ा सा मधु। , कुछ मसाले और लोहबान, कुछ पिस्ता और बादाम।

12 और चान्दी का दुगना भाग अपके साथ ले जाना, क्योंकि जो चान्दी अपके बोरोंके मुंह में डाल दी गई थी, वह तुझे लौटा देना। शायद यह एक गलती थी।

13-अपने भाई को भी लेकर उस पुरूष के पास तुरन्त जाओ।

14-और सर्वशक्तिमान परमेश्वर उस मनुष्य के साम्हने तुम पर दया करे, कि वह तुम्हारे दूसरे भाई और बिन्यामीन को तुम्हारे साथ आने दे। जहाँ तक मेरी बात है, यदि मैं शोकग्रस्त हूँ, तो मैं शोकित हूँ।"

15 तब उन पुरूषोंने भेंट ली, और चान्दी से दुगनी रकम ली, और बिन्यामीन ने भी। वे फुर्ती से मिस्र को गए और यूसुफ के साम्हने उपस्थित हुए।

-यूसुफ के भाई मिस्र लौट आए।

-जब वे मिस्र में पहुंचे, तब यूसुफ ने अपके सब भाइयोंको अपके घर में न्यौता दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 43:16-17

16 जब यूसुफ ने उनके साथ बिन्यामीन को देखा, तब उस ने अपके घर के भण्डारी से कहा, इन मनुष्योंको मेरे घर ले जाकर पशु बलि करके भोजन तैयार करो; वे दोपहर को मेरे साथ भोजन करें।”

17 उस पुरूष ने यूसुफ के कहने के अनुसार किया, और उन पुरूषोंको यूसुफ के घर ले गया।

-जब यूसुफ और उसके भाई एक साथ थे, तब यूसुफ ने अपने भाइयों पर प्रगट किया कि वह वही है।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 45:3-8

3-यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ हूँ! क्या मेरे पिता अभी भी जीवित हैं?" परन्तु उसके भाई उसे उत्तर न दे सके, क्योंकि वे उसके इस साम्हने से डर गए थे।

4- तब यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, मेरे निकट आओ। जब उन्होंने ऐसा किया, तो उस ने कहा, मैं तेरा भाई यूसुफ हूं, जिसे तू ने मिस्र को बेच दिया था!

5 और अब, उदास न हो, और मुझे यहां बेचने के लिथे अपके साम्हने क्रोधित न हो, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे तेरे आगे से प्राणोंको बचानेके लिथे भेजा है।

6 अब दो वर्ष से देश में अकाल पड़ा है, और अगले पांच वर्ष तक न तो हल जोतेगा और न कटेगा।

7-परन्तु परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसलिये भेजा है, कि तुम्हारे लिये पृथ्वी पर बचे हुओं को बचाए, और तुम्हारे प्राणों को बड़े छुटकारे के द्वारा बचाए।

8-तो फिर, मुझे यहाँ भेजने वाले तुम नहीं, बल्कि परमेश्वर थे। उसने मुझे फिरौन का पिता ठहराया, जो उसके सारे घराने का स्वामी और सारे मिस्र का सरदार था।"

-यूसुफ ने अपने भाइयों से क्या कहा?

-यूसुफ ने कहा कि खुद परमेश्वर ने यूसुफ को मिस्र भेजा था।

-क्योंकि अभी भी अकाल था, यूसुफ ने अपने भाइयों से कनान लौटने और अपने पिता और उसके परिवार को मिस्र लाने के लिए कहा।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 45:9-11

9-यूसुफ ने कहा, “अब मेरे पिता के पास फुर्ती करके उस से कह, कि तेरा पुत्र यूसुफ यों कहता है, परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है। मेरे पास आओ; देरी मत करो।

10- तू गोशेन के देश में रहना, और मेरे समीप रहना, और अपके बालकोंऔर पोते-पोतियों, भेड़-बकरियोंऔर गाय-बैलों, और जो कुछ तेरा है, वह सब तेरे पास रहना।

11-मैं वहां तेरा पालन-पोषण करूंगा, क्योंकि अकाल के पांच वर्ष अभी बाकी हैं। नहीं तो तुम और तुम्हारा घराना और तुम्हारे सब लोग बेसहारा हो जाएंगे।’”

-यूसुफ के भाई कनान लौट गए।

सुन, भाइयों ने अपने पिता याकूब से क्या कहा:

आइए पढ़ें उत्पत्ति 45:25-28

25 सो यूसुफ के भाई मिस्र से निकलकर कनान देश में अपके पिता याकूब के पास गए।

26-उन्होंने उससे कहा, “यूसुफ अब तक जीवित है! वास्तव में, वह सारे मिस्र का शासक है।” याकूब दंग रह गया; उसने उन पर विश्वास नहीं किया।

27 परन्तु जब उन्होंने वह सब कुछ जो यूसुफ ने उन से कहा या, और जो गाड़ियां यूसुफ ने उसे ले जाने के लिथे भेजी थीं, देख लीं, तब उनके पिता याकूब का मन फिर गया।

28-और इस्त्राएल ने कहा, “मुझे यक़ीन है! मेरा बेटा यूसुफ अभी भी जीवित है। मरने से पहले मैं जाकर उसे देख लूंगा।”

-सो यूसुफ के पिता और भाई यूसुफ के पास रहने के लिथे मिस्र गए।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 46:5

5 तब याकूब बेर्शेबा से चला, और इस्राएल के पुत्र अपके पिता याकूब, और अपक्की सन्तान, और अपक्की पत्नियोंको उन गाडिय़ोंमें ले गए, जिन्हें फिरौन ने उसे ले जाने के लिथे भेजा था।

-याकूब अपने पूरे परिवार को मिस्र क्यों ले गया?

-क्योंकि यूसुफ मिस्र में रहता था।

-क्योंकि मिस्र में बहुत भोजन था।